भगवत् कृपा

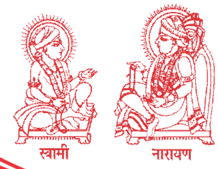

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–15, अंक–12 शनिवार, 26 दिसं. '92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी दिसम्बर, 1992	वार्षिक चन्दा–30.00 प्रति अंक : 3.00

सुवर्ण अवसर ! अमृतपर्व आया......

आईये, आईये
अनिर्देश में
हम सब एक होकर
प्रगट गुणातीतस्वरूपों–
प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी,
प.पू. स्वामिश्री सत्यमित्रानंदगिरिजी महाराज, प.पू. स्वामीराम
प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब,
प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई की निश्रा में
3 फरवरी, बुधवार–प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन पर
अशोकविहार–दिल्ली के हमारे नवनिर्मित मंदिर में
भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों की मूर्तिप्रतिष्ठा करके
प.पू. काकाजी का अमृतपर्व मनायें....

आप सभी को इस महामंगलकारी अवसर पर दर्शन, सेवा, समागम का अमूल्य लाभ लेकर गुणातीत स्वरूपों से आशीर्वाद प्राप्त कर लेने दिल्ली आने का हार्दिक निमन्त्रण है....

साधु मुकुंदजीवनदास, पू. भाईस्वामी व
प.भ. इन्द्रु मल्कानी के हार्दिक जय स्वामिनारायण !

चिदाकाश के सूर्य......अमृतनिधि का अमृतपर्व

अहो हो ! गुणातीत समाज के आद्य सर्जक, प्रणेता व प्राणाधार ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज के अमृतपर्व का महामंगलकारी वर्ष चल रहा है। आनन्द समाता नहीं.....चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ–आनन्द छाया है। यह वर्ष तो हम सभी के जीवन में सुवर्णाक्षरों से लिखा जायेगा। क्योंकि, अपने गुरु का हर वचन अध्धर झेलकर कुर्बान होने वाले एक ध्रुवतारक समान प्रकाशित दिव्य विभूति, जिनकी बदौलत आज समग्र गुणातीत समाज फला-फूला दिखाई पड़ता है....उनके प्रति गुरुभक्ति अदा करके स्वयं को धन्य करने का सुवर्ण अवसर है यह ! सनातन माँ-बाप के साथ एक अद्भुत दिव्य संबंध दृढ़ करके उनकी अन्तर की कृपा प्राप्त करने का अनुपम मंगल उत्सव है यह।

प.पू. काकाजी यानि....? समग्र रूप से शुद्ध नैसर्गिकी ब्राह्मीस्थिति को पाये स्वयं प्रकाशित हीरा ! हीरे तो कई प्रकार के होते हैं, पर स्वयं प्रकाशित हीरा अपने संबंध से स्वयं जैसे अनन्त हीरे बना देते हैं। प्रभु प्रगटाये पुरुष ही स्वयं प्रकाशित हैं, जैसे गंगा की महिमा स्वयंसिद्ध है। हरिद्वार, ऋषिकेश या प्रयाग के कारण गंगा की महिमा नहीं, बल्कि गंगा ने अपने संबंध से इन स्थानों को पवित्रता तीर्थत्व दिया है। गंगा के कारण वहाँ की महिमा बढ़ी है.....और यूँ तो पवित्रता यमुना की भी है, परन्तु उसका माहात्म्य स्वतन्त्र नहीं है। कई स्थानों से गुजरती यमुना का माहात्म्य वृन्दावन और मथुरा में ही है क्योंकि वे स्थान भगवान कृष्ण की लीलाओं से जुड़े हैं। सो यमुना का माहात्म्य भगवान कृष्ण से सम्बन्ध के कारण है, जबकि गंगा का अपने आप में एक स्वतः माहात्म्य है। सभी नदियाँ अन्त में जाकर सागर में ही मिलती हैं, जहाँ नदी का स्वयं का अस्तित्व भी मिट जाता है; जबकि गंगा ऐसी है कि जहाँ उसका सागर के साथ मिलाप होता है वहाँ उसका स्वयं का अस्तित्व समाप्त नहीं हुआ, बल्कि वहाँ सागर का नाम 'गंगासागर' हो गया है !!

जैसा कि प.पू. पप्पाजी कई बार कहते हैं कि injection में distilled water काम आता है। लेकिन distilled water भले कितना ही शुद्ध हो, अन्त समय में व्यक्ति के मुँह में तो गंगाजल ही डाला जाता है, न कि distilled water! सो पवित्रता तो अलग ही कही जाए जो गंगा में पाई जाती है, मानी जाती है। तभी तो भारत की पवित्रता के लिए गंगा की सौगंध दी जाती है। ऐसी ही नैसर्गिकी स्थिति है–ब्रह्मस्वरूप संत की–प.पू. काकाजी की !

प.पू. काकाजी के जीवन का प्रवाह सच में गंगा के प्रवाह जैसा पवित्र, शीतल, शाश्वत और गहन है। आज भी जिसे शीतलता और शांति चाहिए वह उनकी स्मृति से और गद्गद कंठ से पुकार करे तो ऐसी ही शांति अनुभव कर पायेगा।

प.पू. काकाजी के बारे.....?

'जिसका दिल साफ हो और रुह पाक हो,
उसे विश्वास लाने में कोई दिक्कत नहीं होती।'

दूरदर्शन पर इन दिनों दिखाए जा रहे धारावाहिक बाईबल के episode-2 का यह कथन प.पू. काकाजी के जीवन में पूर्णतया साकार दिखाई पड़ता है..... प.पू. काकाजी जब से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज के सम्बन्ध में आये, तब से कैसे भी संजोगों में उन्हें उनके वचन में– उनकी क्रिया में कभी किसी प्रकार की शंका–सन्देह नहीं हुआ; क्योकि प.पू. काकाजी की आत्मा

परम पवित्र थी.... इससे अधिक इनकी पवित्रता का क्या प्रमाण हो सकता है?

प.पू. काकाजी अर्थात् सुहृद्भाव का सागर ! सागर की फिर भी कहीं सीमा दिखाई पड़ती है, जबकि प.पू. काकाजी द्वारा बहाये गए सुहृद्भाव के धोध की कोई सीमा दिखाई नहीं पड़ी !! सो, **प.पू. काकाजी यानि सुहृद्भाव का चिदाकाश.....** प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में–**'धन्यवाद काकाजी, पप्पाजी और कांतिकाका को–जिन्होंने बापा का अन्तर का अभिप्राय समझकर आत्मीयता की भावना को धरती पर सर्वप्रथम साकार करी। तिरस्कार करने वाले या उपेक्षा करने वाले पात्रों में भी अहोभाव से खोकर आत्मीयता की गंगा का धोध बहाया !'**

बचपन में मस्तीखोर बालक, तेजस्वी विद्यार्थी, चैतन्यप्रेमी, सदा निडर व साहसिक, सफल व्यवहार कुशल व्यापारी, प्रखर तत्त्वचिंतक, अनुपम निष्ठावान व शूरवीर सेवक–इन विशिष्ट गुणों के कारण प.पू. काकाजी गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुवर्य योगीजी महाराज को भा गये और उन्होंने गुणातीत परम्परा की मशाल सौंपने के लिए प.पू. काकाजी को सर्वप्रथम पसन्द कर लिया.....गुरुजनों के वचन को दृढ़ता से झेलकर कल्पना से परे की पराभक्ति तो जैसे प.पू. काकाजी को जन्मसिद्ध थी....अत्यन्त राजी होकर 3 Feb. 1952 के महामंगलकारी दिन योगीबापा ने प.पू. काकाजी को चिदाकाश की समाधि में डुबोकर प्रभु का साक्षात्कार कराया और तब से लेकर जीवन की अंतिम सांस तक अक्षरधाम की ज्ञानसमाधि में अखंड रहते हुए संबंध में आये चैतन्यों में ब्रह्मभाव प्रगटा कर जंगम चैतन्य मंदिर तैयार करने की पराभक्ति में लगे ही रहे....लगे ही रहे....

प.पू. काकाजी यानि योगी हृदय की धड़कन, उनका रहस्य, उनका मूर्तिमान अभिप्राय.... अक्षरपुरुषोत्तम की सनातन तत्त्वनिष्ठा करानी, यही प.पू. काकाजी का एक मात्र उद्यम......वे नितान्त निःस्वार्थ ही थे। भक्त को भले भेददृष्टि हो, परन्तु वे तो उसके परममित्र बनकर उसे मददरूप होने अपना कंधा देते कभी थके ही नहीं। उनके जीवन में कोई स्वार्थ नहीं था–उनमें दिखाई पड़ती एकमात्र परोपकार वृत्ति और भक्तों के दुःखों को टालने के लिए स्वयं के सर्वस्व का बलिदान दे देने की तत्परता। भक्तों का पक्ष रखते हुए उन पर क्या गुजरेगी–कितनी बदनामी होगी, वह भी उन्होंने कभी नहीं सोचा। कई बार बाहरी स्तर पर उनकी कार्य प्रणाली समझ नहीं आती थी और कई उनकी अवहेलना कर देते। अरे ! स्वजनों-आत्मीय जनों ही उनकी उपेक्षा करते; तब भी उन्होंने किसी के प्रति कभी भावफेर नहीं किया। इस महायोगी ने सदैव प्रभु के संकल्प के मुताबिक सभी के विकास के लिए, जीव का परम सुहृद बनकर, खूब सहन करके प्रभु का ही साथ दिया है....निर्व्याज, निःस्वार्थी, निरपेक्ष, चैतन्यजननी बनकर हमें प्रेम दिया....हमारी तरफ से कड़वे घूँट पिये...अरे ! हमारे प्रायश्चित भी उन्होंने किए। चाहे कैसी भी मुश्किलें हो–पर वे कभी भी क्षुब्ध-निराश नहीं हुए, बल्कि स्वयं के संकल्प से विचलित भी नहीं हुए। स्वयं के समर्पण की सहज भावना रखते हुए उन्होंने पू. बापा के संकल्प की ज्योंत को अखंड प्रज्जवलित रखी।

उन्होने किसी के लिए भी कोई नियम–कोई पाबन्दी नहीं रखी। 'समस्त जीवन एक योग है'.... इस सूत्र के आधार पर उन्होंने हरेक को विकास के मौके दिए हैं। कभी भी किसी की ओर कोई कठोरता व्यक्त होती किसी ने नहीं देखी–उनका

धैर्य कभी खंडित हुआ नहीं दिखाई दिया।

सबके साथ सम्पूर्ण रसबस होते हुए भी वे सबसे निर्लेप और अलिप्त ही रहे....वे हरेक के अपने बने—राजनैतिक नेता के साथ उसकी कक्षा पर जाकर, संत के साथ उसकी कक्षा पर जाकर और साधक के साथ उसी की कक्षा पर जाकर खड़े रह जाते।

हरेक प्रवृत्ति के प्रेरक और संचालक होते हुए भी खुद ने किसी स्थान का मोह नहीं रखा। सदा परदे के पीछे रहकर काम करा। उनके द्वारा अनेक चमत्कारिक कार्यों के लिए प्रभु का आभार मानकर 'स्व' के भाव को छोड़कर वहाँ से दूर निकल गए। A man of action-a force behind होने के बावजूद भी स्वामीसेवकभाव से गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुवर्य योगीजी महाराज को ही धन्यवाद दिया है। साथीदारों का निरन्तर आभार मानते रहे...हमने कई बार उनके मुख से सुना था—'**मुझे अकेले को नहीं—पप्पाजी, स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और साहेब को भी मेरे साथ ही गिनो, ये मेरे साथीदार भी मेरे जैसे ही हैं। इनके साथ-सहकार से यह सब हुआ है। यह सब अकेले हाथों नहीं बना—यह भूलना नहीं।**'

भगवान स्वामिनारायण के सन्देश को व्यापक बनाने और गुणातीत ज्ञान के बीज को देश-परदेश में बोने में स्वयं को याहोम किया.....अकथनीय परिश्रम किया, हरेक स्वरूपों की महिमा गाई। गला दुःखाया और कितनी ही जगहों पर बुरे भी दिखाई पड़े.... गालियाँ खाईं, बदनाम हुए...निर्दोष बुद्धि के तो वे राजा थे। खुद के विरोधियों को जानते हुए भी प्रेम से हँसते हुए, सहते हुए, गले लगाते रहे....कभी ख्यालमात्र भी पड़ने नहीं दिया और जानते हुए बुद्धु ही बनते रहे। सबका मंगल ही चाहा। आखिरकार भेददृष्टि को मिटाकर भक्तों में निर्दोषबुद्धि, सुहृद्भाव, भावात्मक एकता लाने अपनी स्थूल देह की भी आहुति दे दी और...हम सब के लिए राजमार्ग तैयार किया। सच ? कैसी प्रीति होगी उन्हें हमारे प्रति ? कैसे ऋण चुका पायेंगे उस दिव्य 'माँ' का ?

महिमा के पार को पाये **प.पू. काकाजी के पास एक अमोघ शस्त्र था—'स्वामिनारायण' मन्त्र की धून** ! वचनामृत और स्वामी की बातों के आधार पर ही उन्होंने अपनी परावाणी प्रतिपादित करी। कोई भी भक्त आये या जरा खाली समय हो तो धून्य, भजन, कथावार्ता, जपयज्ञ, सुहृद्भाव—मैत्रीभाव की बातों का सतत् प्रवाह—उनके पास अखंड चालू रहता। हरेक के दुःख—व्यवहारिक या आंतरिक, आध्यात्मिक उलझनों को धून, भजन, यज्ञ, महापूजा करके दूर करते....वास्तव में हम आज जो आनन्द मस्ती के झूले में झूल रहे हैं उसकी आधारशिला व सर्जनहार तो पू. काकाजी ही थे।

पहले से ही गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुवर्य योगीजी महाराज की मर्जी में सर्वस्व लुटाने प.पू. काकाजी जैसे दृढ़ संकल्प थे....**उनका जीवन ही मानो गुरुवाक्य** ! बापा की आज्ञा से नन्दाजी के लिए अपने सारे व्यापार, व्यवहार का पूर्णविराम करके सांबरकांठा चुनाव लड़ने गये....ठीक उसी प्रकार दिल्ली में स्थावर मन्दिर बनाने की—उत्तर भारत में भगवान स्वामिनारायण का सन्देश फैलाने की गुरुदेव योगीजी महाराज की मर्जी को देखकर कुछ भी गिने बिना उस संकल्प को साकार करने में जुट गये....गुरुभक्ति का अजोड़ आदर्श...बेनमून मूर्तस्वरूप यानि—प.पू. काकाजी !

1969 नवम्बर मे जब ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज ने लगातार दस दिन तक जब दिल्ली में मन्दिर बनाने की रट लगाई (योगीचरितम् पृ.172-

173), तब उनसे स्थूल रूप से सम्बन्ध ना होने पर भी प.पू. काकाजी ने गुरुहरि योगीजी महाराज के उस संकल्प को उठा लिया....गुरु और शिष्य का कैसा अद्वैत सम्बन्ध होगा ? यह इसी प्रसंग से स्पष्ट होता है और तब दिल्ली में सत्संग प्रचार के लिए कोई base भी नहीं था, स्वामिनारायण धर्म के नामोनिशान से कोई परिचित ही नहीं था....कोई सानुकूलता भी नहीं....संतों के रहने की जगह भी नहीं ! इन विपरीत संजोगों को देखे-अनदेखे करके प.पू. काकाजी ने सिर्फ प्रसन्नता लुटाने 'गुरुजी' को दिल्ली के नये कार्यक्षेत्र का बगीचा सौंपा और कहा कि **'यह तुम्हें मैं नहीं भेज रहा, बापा का संकल्प है और वह हमें फैलाना है।'**

पानी में जहाज चलाना आसान है, पर दिल्ली में कार्य करना–वह तो रेती में जहाज चलाने जैसा मुश्किल ! पर प.पू. काकाजी स्वयं बार-बार दिल्ली आते....सर्दी, गर्मी कुछ नजर में नहीं लिया ! कई बार तो सबकी इच्छा विरुद्ध जाकर उन्होंने संतों को दिल्ली भेजना जारी रखा। खूब शूरवीरता से अकेले हाथ लड़े...यहाँ तक कि संतों को भी कई बार लगता कि दिल्ली का सत्संग का तो विकास कुछ हो नहीं रहा, तो दिल्ली में परिश्रम करने का फायदा क्या ? किन्तु पू. काकाजी की निगाह तो इन संजोगों की ओर कभी गई ही नहीं। बस वे केवल अपने गुरु के प्रति वचननिष्ठ व दृढ़प्रतिज्ञ....! इनका सूत्र था Do not consider the facts as they are, go according to your inner conviction. उनकी एक ही लगन थी–गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज की योजना में समर्पित होकर उनकी प्रसन्नता पाना....कुछ भी ध्यान में लिये बिना वे लगे ही रहे....लगे ही रहे.....प.पू. काकाजी की बलभरी कथावार्ता व परिश्रम को देखते हुए संतमंडल ने अनेक टीका–चर्चाओं के बावजूद अपनी निगाह एकमात्र उनके वचन की ओर रखी और प.पू. काकाजी के वचन में मिट जाने में अपने जीवन की सार्थकता मानी.....

फलस्वरूप आज दिल्ली में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज व गुरुहरि योगीजी महाराज का मंदिर बनाने का 'ब्रह्मसंकल्प' साकार हो उठा..... प.पू. काकाजी ने इस बगीचे को अपने खून से सींचा.....दिल्ली में आत्मबुद्धि व प्रीति का समाज तैयार करना–उनका स्वप्न था.....'सर्वदेशीयता' का मन्त्र हरेक के 'कान' में फूँका। सर्व गुणातीत स्वरूपों के प्रति एक सरीखा ही पूज्य भाव !

आज प.पू. काकाजी का अमृतपर्व का वर्ष–और–तभी दिल्ली के मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा हो रही है क्योंकि इस मंदिर की नींव की ईंट में स्वयं को दबाकर हमारे लिए 'राजमार्ग' तो प.पू. काकाजी ने तैयार किया। प.पू. काकाजी स्वयं रिक्शा में गये.....ट्रेन में सफर किया...पैसों की खूब तंगी होते हुए हमें कमी महसूस नहीं होने दी। गुरुनिष्ठा और गुरुभक्ति का अनुपम आदर्श रूप बना यह मंदिर युगों-युगों तक प.पू. काकाजी का अनथक् परिश्रम याद दिलाता रहेगा।

1985 में दिल्ली विकास प्राधिकरण से मंदिर बनाने हेतु नई जगह (1000 sq. mtr.) मिली....प.पू. काकाजी स्थूल रूप में सिर्फ तीन बार ही उस भूमि पर घूमे और जंगम व स्थावर मंदिर का संकल्प करके अचानक मार्च 1986 में हम सब के बीच में से स्थूल रूप से विदाई ले ली....इस अचानक बनी घटना से सब स्तब्ध रह गये....दिल्ली मंदिर की तो शुरुआत तक नहीं हुई

थी..पर प.पू. काकाजी तो अपना कार्य कराने पात्र तैयार करके निश्चिंत होकर ही गये थे....कोई सुविधा न होते हुए भी सुरुचि से लग पड़ा। प.भ. मल्कानी साहब के शब्दों में–**दिल्ली का मंदिर बनना अपने आप में एक अनोखी ऐतिहासिक मिसाल होगी.....कि समर्थ गुरु शरीर छोड़ने के बाद भी अपने सेवकों की–उनके चैतन्य के विकास की कैसे देखभाल, परवरिश करता है।**

जैसे परमहंस योगानन्दजी के शब्दों में–'यह सदैव याद रखना–जब मैं स्थूल रूप में नहीं होऊंगा और भले इस तरह तुम से बात नहीं करूंगा लेकिन तब भी तुम्हारे हर विचार और क्रिया मेरे ध्यान में रहेंगे। जो नहीं चाहते, उनके जीवन में मैं कोई हस्तक्षेप नहीं करता, पर जो मुझे समर्पित हुए हैं और मेरे मार्गदर्शन की जिन्हें जरूरत है उनके लिए मैं वैसे का वैसा सदा हाजिर हूँ, वह प्रतीति भी उन्हें होगी। मेरी चेतना हमेशा उनसे जुड़ी रहेगी। मैं उनके सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार-संकल्प से अनभिज्ञ नहीं रहूँगा।

भले आपको दिखाई न दूँ–परन्तु विश्वास रखना कि मैं कहीं और जगह भी हमेशा तुम्हारे हित में ही कार्यरत रहूँगा। यह जरूरी नहीं है कि मेरे स्थूल दर्शन से ही मैं आपको सहायक हो पाऊं, बल्कि यदि आप अन्तर की गहराई से नियमित रूप से ध्यान, भजन करेंगे तो आप मुझे स्वयं के अधिक नजदीक महसूस करेंगे।'

यूं प.पू. काकाजी भले ही स्थूल रूप से विद्यमान नहीं है....पर अब भी वे वैसे ही अपने संबंधित चैतन्यों के विकास के लिए कार्यरत हैं।

प.भ. मल्कानी साहब–जो प.पू. काकाजी के संकल्प से दिल्ली के भक्तों को एक अनोखे उपहार रूप मिले हैं.....उन्होंने खूब आत्मीयता से गुरुजी का दायाँ हाथ बनकर दिल्ली मंदिर बनाने में जो सहयोग दिया है..समग्र गुणातीत समाज यह कभी भूला नहीं पायेगा.....बहुत कम समय में प.भ. मल्कानी साहब का सारा परिवार समग्र गुणातीत समाज के लिए आदर्शरूप बन गया है।

स्थावर मंदिर बना......गुणातीत पुरुषों का संकल्प साकार हुआ.....अब 3 फरवरी, बुधवार को प.पू. काकाजी के साक्षात्कार के महामंगलकारी दिन प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी,प.प. हरिप्रसादस्वामि जी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई–स्वरूपों के वरद्हस्तों द्वारा मूर्ति प्रतिष्ठा होगी....पर प.पू. काकाजी की चाहना इसके साथ-साथ चलते-फिरते जंगम चैतन्य मंदिर बनाने की थी.....सो पहले उन्होंने आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र की शुरुआत की। उनकी चाहना सोने के कलश चढ़ाने की अधिक थी....यही प.पू. काकाजी की 'अभिप्राय की भक्ति' थी.... सुहृद्भाव के कलश चढ़ाना–वही सच्ची मूर्तिप्रतिष्ठा, प्राणप्रतिष्ठा कही जायेगी। स्थावर मंदिर तो कई बना पाते हैं, पर चैतन्य मंदिर बनाना वह एक अति कठिन कार्य है....और प.पू. काकाजी ने अपने मानसपुत्ररूपी चैतन्य मंदिरों को गुणातीत ज्ञान का जो अमूल्य वारसा दिया। गुणातीत कुल की साधुता जीवंत रखकर गुणातीत समाज की जो देखभाल की है उसे देखकर हृदय से सहज उद्गार निकल पड़ते हैं.....धन्य-धन्य काकाजी...आपको ! इसके अलावा तो हम इन मायिक चक्षुओं से या शब्दों में आपका क्य वर्णन भी करेंगे....?

पर, जब आपका अमृतपर्व आ रहा है–जो कि हमारे आध्यात्मिक आरोहण के लिए दिव्य मंगल पर्व है.....आप जब स्थूलरूप में थे तब भी अपना वात्सल्य लुटाते ही रहे.....आज भी पहले से अधिक दिव्यस्वरूप में लुटा ही रहे हैं.....सो भीतर से प्रार्थना निकला करती है.....हे काकाजी ! सर्वप्रथम

आपका परिश्रम व्यर्थ न जाये.....प्रकृति पुरुष के इस लोक में तो हमारी वाह-वाह होगी ही, पर आप हमेशा पूछते थे.....तुम्हारा जीव ब्रह्मरूप हुआ ? तुम्हारा रॉकेट अक्षरधाम में पहुँचा ? तुम्हारा स्त्रीपुरुष भाव गया ? तुम 'साधु' हुए ? तुम मूर्ति में अखंड रहते हुए ?

तो, अब अपना बन्दर मन छोड़कर आपके इन प्रश्नों पर हम दिल की सच्चाई से अन्तर्दृष्टि करें, सुरुचि प्रगटायें–विचारें और साधुता का हुन्नर सिद्ध करें.....

ये सिद्धियाँ, ये वैभव, ये सामर्थ्य का प्रलोभन शिष्यों की महोब्बत कभी कुछ ऐसा रूप धारण कर, मानसिक अप्रमाणिकता या धोखेधड़ी में, बनावट में फंस कर हमें अवांतर में न ले जाये– उतनी रक्षा तो हमारी हे करुणामूर्ति ! आप ही करा करना।

यही आपके अमृतपर्व पर आपके व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के चरणों में अन्तर की आरजु सहित शत-शत प्रणाम !

❋ ❋ ❋ ❋

ब्रह्मप्रवाह

(अ)

गुणातीत सत्संग में 'मायिकभाव' या 'अस्मिता' existential awareness) एकांतिकों को भी बाधारूप होती ही है और सात्विक या निर्गुण भक्तों को भी सूक्ष्म कसर रह जाती है। जिससे–

मूर्ति भूलकर कार्य करने के–
भेदभाव के
एक पक्षीय उठाव के,
अलौकिकता के,
सूक्ष्म मान के

राग रह ही जाते हैं। वह अब सब को भीतर में ख्याल पड़ने लगा है और **केवल ही केवल** आध्यात्मिक भूमिका में ही–Divine consciousness में **अखंड जाग्रत** रहने के प्रयत्नों प्रचलित होने लगे हैं। वही पाताल तक नींव मजबूत हुई मानी जीयेगी और **ऐसा सनातन कार्य दिल्ली में भी मंदिर बनते अचूक–अवश्य होगा ही व गुणातीत ज्ञान का सन्देश दिल्ली से भी विश्व में फैलेगा ऐसे शुभाशीष हैं। शर्त केवल–सद्भाव और सुहृद्भाव की, दो मिलकर जोड़ में ही काम करने की है,** जिसकी शुरुआत श्री राजु भट्ट ने कुरुक्षेत्र में कर दी है और वहाँ प्रफुल्लभाई, दालिया व भक्तों, बहनों कर सकें उसके लिए प.पू. स्वामिजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. साहेब, पू. कांतिकाका, प.पू. अक्षरविहारीजी सब को बल दें यही प्रार्थना है।

पंजाब के हरिभक्तों को भी सच्ची सूझ मिले व सुखी होवें वही गुरुचरणों में प्रार्थना है.....

भव्य डंका गुरुवर्य शास्त्रीजी के संकल्प से बज जायेगा.....

शुभं भवतु–मंगलं भवतु.....

सब सुखी रहो–आनन्द करो यही इस शुभ दिन की भेंट......

11-3-1983

❋ ❋ ❋ ❋

(ब)

......जीवन में प्रभु—प.पू. बापा के मिलने के बाद जो भी कोई छोटा-बड़ा प्रसंग बनता है, वह वे ही किसी हेतु से ही—

हमारे ही विकास के लिए

कुछ समझाने के लिए,

पूर्णता में आगे ले जाने,

स्व-भाव रहित करके ब्रह्मस्वरूप में वर्ताने ही कर रहे होते हैं और **अन्तर का पक्का सम्बन्ध** होने के बाद माया-महामाया—प्रकृति—**परम सुखदायी** ही होनी चाहिए और जब हमारे में ही पूर्णरूप से उनकी रीत का बदलाव आयेगा तब वहाँ ऐसा सुखद परिणाम जैसे पू. हरिप्रसादजी, पू. पप्पाजी, पू. काकाजी, पू. महंतस्वामी, पू. प्रमुखस्वामी में महाशक्ति के प्रगटीकरण के साथ आया—वैसा सभी के जीवन में जरूर-जरूर आयेगा ही। परन्तु वहाँ हमारे में कुछ न कुछ पतला आवरण मान्यता का, बौद्धिक छींटों का—बन्दर जैसे मन का आभास भी रह ही जाता है। सो प्रसंग बनते ही रहेंगे और हम जब पक्के निर्णय से उसके ही—केवल सद्. गुरुदेव के ही होकर उनकी ही मर्जी-रुचि के मुताबिक वर्तेंगें तब ही अखंड प्रकाशमय अक्षरधाम में ज्ञान समाधि के रूप में सहजावस्था में—समता-सरलता और साधुता से रहते हो जायेंगे व गुणातीत ज्ञान की भी पुष्टि होती जायेगी और तब महाराज आगे-पीछे रहकर खूब ही देह की—प्रकृति से जीव की रक्षा करते ही रहते हैं। तो, प्रसन्नता से—आनन्द में तीव्रता से पुकारोगे वह प.पू. बापा उसी पल सुनेंगे ही। केवल सतत् **अंतर्दृष्टि** ही व **प्रायश्चितरूप प्रार्थना** दो-तीन बार किया ही करनी और वच. प्र.16 व वच. म.26 की ओर यदि नजर होगी तो प्रभु सब कुछ आसान करते रहेंगे। तो कसरमात्र टल जाये और सारी माया शांत हो जाये—**साम्यावस्था और योगमाया** उसके लिए 7 दिन सुबह-शाम special (विशेष) कार्यक्रम रखना। प्रभु सब कुछ ठीक-ठाक कर देंगे। हमें दिखाई नहीं पड़ता इसलिए—बौद्धिक लीपापोती—छुपाछिपी करते रहते हैं। तो अन्तराय छोड़कर केवल साक्षीभाव से प्रभु की ओर ही निगाह रखकर **उनमें से ही स्पष्ट** आये उतना ही करना; बाकी प्रभु पर छोड़ देना। ऐसी नई आदत सभी को डलवाना। वहाँ के लिए प्रार्थना हर रोज पू. बापू-राजु-दिनकरभाई करते हैं तो राजी रहनाजी। पू. बापा और प्रत्यक्ष स्वरूपों **सर्वोपरि व** प्रगट ही हैं। उनमें पू. बापा को देखकर—प्र.24 के मुताबिक मध्य. 25 व अंत्य. 26 के आखिरी पैराग्राफ की प्रार्थना करते रहना। सभी कुछ सानुकूल हो जायेगा। तो **अन्तर के आशीर्वाद भेज रहे हैं।**

इलियीनीस, वोकीगन

1982

—प.पू. काकाजी महाराज

✻ ✻ ✻ ✻

मेरा काम 'मेरा योगी' करता है—

आप सभी को यह जानकर अत्यधिक आनन्द होगा कि 1992 में अमदाबाद में भव्यता से मनाई गई 'योगी शताब्दी' निमित्त बोचासणवासी संस्था की प्रेरणा से भारत सरकार द्वारा ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्रीजी योगीजी महाराज की हँसती मूर्ति की डाक टिकट प्रकाशित हुई है....करोड़ों-करोड़ों वंदन हो प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. प्रमुखस्वामिजी महाराज को–जिन्होंने अत्यधिक भक्ति अदा करके गुरुहरि योगीजी महाराज का नाम आज देशविदेश में–दिगंत में फैलाया.....समग्र गुणातीत समाज–अरे ! समस्त मानवजाति युगों-युगों तक उनकी ऋणी रहेगी।

अब 3 Feb. 1993 के महामंगलकारी दिन जब हम हमारे प्यारे प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का 'अमृतपर्व' मनाने जा रहे हैं, तब अपने इस लाडले मानसपुत्र के अमृतपर्व पर दिल्ली आने का हार्दिक निमन्त्रण देने हरेक घर पर स्वयं गुरुहरि योगीजी महाराज इस टिकट के रूप में अपनी खुशी, आनन्द व्यक्त करने आपके पास आ रहे हैं... प.पू. काकाजी कई बार कहते थे–'**मेरा काम मेरा योगी करता है।**' यह सांकेतिक घटना गुरु-शिष्य के अनोखे सम्बन्ध का प्रत्यक्ष प्रमाण है। आप सभी गुरुहरि योगीजी महाराज के निमन्त्रण पर दिल्ली आओगे न !

❊ ❊ ❊ ❊

'पू. काकाजी—मेरी निगाह से'

- योगी महाराज के प्रति असाधारण लगाव और सर्वोच्च कक्षा की स्वरूपनिष्ठा यानि–काका !
- दादुभाई बचपन से ही अनादि मुक्त। स्वतन्त्रता और शूरवीरता–ये दो बचपन के गुण। किसी से डरने की तो बात ही नहीं। काकाश्री को भगवान के सिवा किसी का भी प्रभाव नहीं, डर नही। एकदम निडर और स्वतन्त्र। वे जो करने की ठान लेते, वह करके ही चैन लेते। पहले से ऐसा स्वभाव था। वे किसी भी प्रकार का अन्याय कभी भी सहन नहीं करते थे, चलाते भी नहीं थे। शूरवीरता से उसका सामना करते। फिर जो भी होना हो, भले होए। जोखिम की परवाह नहीं करते और हमेशा प्रवाह के विरुद्ध ही चले।
- प.पू. काकाजी के दो जबरदस्त गुण। एक तो गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति असाधारण स्वरूपनिष्ठा। स्वरूपनिष्ठा के तो वे ऐसे राजा जिसे 'निर्दोषबुद्धि' कहते हैं। स्वरूप को ही वे कर्ता-हर्ता, नियंता माने। और किसी को तो कर्ता-हर्ता माने ही नहीं। सो 24 घंटे उन्हें मस्ती रहती–कौन मिला है ! 'भगवान मिला है'–इस वाक्य का उन्होंने साक्षात्कार कर लिया।
- प.पू. काकाजी पहले से ही खूब महत्वाकांक्षी। गुरुहरि योगीजी महाराज की निष्ठा हुई....कर्ता, साकार, प्रगट और सर्वोपरि योगीजी महाराज हैं, उनके सिवा और कोई नहीं–यह निष्ठा हुई। फिर केस हुआ और सब कुछ हुआ, महत्वाकांक्षा की धज्जियाँ उड़ गई, लक्ष्मी की धज्जियाँ उड़ गई....सब मान्यताओं की धज्जियां उड़ गई पर कर्ता-हर्ता गुरुहरि योगीजी महाराज को ही माना और फिर भी किसी दिन उनके प्रति उन्हें मनुष्यभाव नहीं आया !

- ❑ प.पू. काकाजी का विशिष्ट गुण–वे कोई भी क्रिया करें तो उस समय वे उसमें पूरे खो जाकर करते दिखाई पड़ते और जब वह छोड़ दे तो फिर उसकी उन पर तनिक भी असर नहीं रहती।
- ❑ कई-कितने ही प्रसंग बने और बीते–परन्तु काकाजी का मुँह उतरा हुआ किसी ने देखा ? नहीं ! आनन्दमय मूर्ति ही है। प.पू. काकाजी को जब भी देखो तब हंसते ही दिखाई पडते। उन्हें कुछ लिपटा ही नहीं। मुख्य बात यह है। दुनिया को जो कहना हो वह भले कहे, परन्तु ना ही उन्हें एग्री लिपटी, ना पत्नी, ना ही और कुछ। वे बस–मस्तराम थे !
- ❑ जहाँ गुरुहरि योगीजी महाराज ने बिगुल बजाया, वहीं प.पू. काकाजी ने सन्देश अध्धर झेल लिया और सर्वस्व कुर्बान करके स्वयं को याहोम कर दिया।
- ❑ प.पू. काकाजी यानि 'बुलडोजर' ! चाहे कैसी भी पथरीली और बंजर भूमि में वह चल पड़े तो जमीन समतल बना दें। इस प्रकार चाहे कैसे ही चैतन्य हों, प.पू. काकाजी उन्हें भगवान की पहचान करा दें।

–प.पू. पप्पाजी

❑ ❑ ❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	28.1.93	सोमवार	एकादशी, व्रत ब्र.स्व.प.पू. योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन
2.	दि.	28.1.93	गुरुवार	वसंतपंचमी श्री शिक्षापत्री जयन्ती, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज की जयन्ती
3.	दि.	3.2.93	बुधवार	एकादशी, प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन दिल्ली में ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का अमृतपर्व उत्सव व मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा
4.	दि.	17.2.93	बुधवार	एकादशी, व्रत
5.	दि.	19.2.93	शुक्रवार	महाशिवरात्रि

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110 032